

[Prof. M.S. Swaminathan]

This is a sad situation and without paying attention to the problems of rural women, we may not be able to improve our position in the area of gender equity. Another disappointment has been the poor implementation of the National Policy for Farmers, placed on the table of this House in November 2007. The sooner we change our mindset regarding farm women and men and re-designate for this purpose the Ministry of Agriculture as the Ministry of Agriculture and Farmers' Welfare, the greater will be the prospects for the country to sustain with home-grown food, the legal right to food enshrined in the National Food Security Bill.

Sir, 2013 marks the 70th anniversary of the Bengal Famine and we should be proud of the fact that our farmers and scientists have enabled us to come out of the "ship to mouth" existence of the 1960s, and initiate the world's largest social protection measure against hunger.

Finally, Mr. Vice-Chairman, Sir, as a biologist, I wish to end by citing an outstanding example of democracy at the household-level. All here are aware of the path-breaking work of Charles Darwin in elucidating the origin of species, including ourselves, through evolution. Darwin's wife, Emma, was a staunch catholic and the theory of evolution was considered blasphemy both by Catholics and several other religious groups at that time. She was once asked how she managed to live peacefully with Charles considering that his theory of evolution was totally unacceptable to her. She replied, and I quote:

"Charles lives by reason and I live by faith; what leads to faith is feeling and not reasoning. We agree to disagree and live very happily together".

Mr. Vice-Chairman, Sir, agreeing to disagree and living happily together is the very essence of democracy. I am confident that this House will always uphold this principle and thereby remain the flagship of our secular democratic republic. I thank you all, again, Mr. Vice-Chairman, Sir.

MATTER RAISED WITH PERMISSION

Homage to Sardar Bhagat Singh, Shri Raj Guru and Shri Sukhdev

श्री के.सी. त्यागी (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, कल 23 मार्च को शहीदी दिवस है। इस दिन सरदार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की शहादत हुई थी। चूंकि कल हाउस नहीं

रहेगा, तो मैं चाहता था कि आपकी तरफ से कोई रिज़ोलुशन आता, लेकिन मैं दो-तीन मिनट में अपनी बात खत्म करना चाहता हूँ। 8 अप्रैल को इसी संसद के अन्दर सरदार भगत सिंह ने किसी को जिस्मानी तौर पर नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं, बल्कि बहरे कानों को सुनाने के लिए बम फेंका था। बम फेंकने के बाद वे काफी समय तक अपने मित्रों के साथ वहीं खड़े रहे और 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा लगाते रहे। इससे किसी को कोई क्षति नहीं हुई। उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरा एक निवेदन यह है कि जिस स्थान पर बम फेंका गया था, वहां मॉनुमेंट के तौर पर कोई स्मारक बनाया जाए।

दूसरा, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ हिन्दुस्तान में अदम्य साहस और अनूठे बलिदान की इस प्रकार की कोई अन्य घटना सुनने को नहीं मिलती है। जब लार्ड इरविन आते हैं, तो लार्ड इरविन और गाँधी जी के बीच 'गाँधी पैक्ट' की बात चलती है। उस समय लगता है कि उनकी फांसी माफ करने की कोई बात की जाएगी। भगत सिंह के माता-पिता उससे मिलने जाते हैं। उस समय भगत सिंह की उम्र मात्र तेईस या साढ़े तेईस साल की है। माता-पिता पुत्र मोह में कहते हैं कि इस चिट्ठी पर दस्तख़त कर दो तो तुम्हारी फांसी माफ हो जाएगी, लेकिन भगत सिंह अपने माता-पिता को जवाब देते हुए कहते हैं-

ये जान तो आनी जानी है, इस जां की कोई बात नहीं।

जिस धज से कोई मक़तल में गया, वो शान सलामत रहती है।।

उसके बाद भगत सिंह जी की शहादत होती है। भगतसिंह जी अपने मित्रों को चिट्ठी में लिखते हैं, "मैं चाहता हूँ कि मेरी फांसी का दिन अब करीब आ जाए। मेरा नाम भारतीय क्रान्ति का प्रतीक बन गया है, इसलिए जितना अधिक मैं जिन्दा रहूंगा, इस बीच अगर मुझसे कोई इन्सानी गलती हो गई, तो उसका नुकसान भारत की क्रान्ति को होगा।" एक दिन पहले ही ब्रिटिश साम्राज्य के द्वारा वह फांसी के फंदे पर चढ़ा दिए जाते हैं।

मेरा निवेदन यह है कि एक तो आप शहीद दिवस पर एक मिनट का मौन कराएं। दूसरा, जहां भगत सिंह जी ने बम फेंका था, उस जगह को प्रतीक के रूप में चिन्हित करें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री रवि शंकर प्रसाद (बिहार): सर, हम इनके इस विषय से स्वयं को एसोसिएट करते हैं।

श्री शान्ता कुमार (हिमाचल प्रदेश): सर, मैं भी इनके इस उल्लेख का समर्थन करता हूँ।

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with this issue.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. E.M. SUDARSANA NATCHIAPPAN): Shri Prakash Javadekar. ...*(Interruptions)*... Now, we take up the Bill for introduction. ...*(Interruptions)*... The National Waterway (Lakhipur-Banga stretch of the Barak River) Bill, 2013; Shri G.K. Vasan. ...*(Interruptions)*...